

भारतीय कृषि

- भारत एक कृषि प्रधान देश है।
- यहाँ की 65% आबादी गाँव में बसती है। इन गाँवों में रहनेवाले किसानों का जीवन परोपकार की भावना से भरा हुआ है।
- उनकी जरूरतें कम होती हैं।
- अन्नदाता कहलानेवाले किसान भीतर से कैसे सुखी हो, उन्हें आंतरिक खुशी कैसे मिले, कैसे उनका जीवन उत्कृष्ट हो इस हेतु इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।



परमात्मा के चैतन्य को जोड़कर कैसे प्राकृतिक संपदा से भरपूर खेत-खलिहान हो एवं सुखी-समृद्ध किसान का जीवन हो.... यही इस प्रदर्शनी का प्रमुख विषय है।

प्रकृति के साथ तालमेल

- कुदरत का अवलोकन करें तो ख्याल आता है - नियमित ऋतु का चक्र चलता रहता है।
- जिस ऋतु में जिन तत्वों की शरीर को आवश्यकता होती है, उन ऋतु में ऐसे तत्वों से समृद्ध फल-सब्जियाँ प्रकृति में विपुल मात्रा में पाई जाती हैं।



- प्रकृति के साथ तालमेल बिठानेवाले मनुष्य को स्वास्थ्यविषयक समस्याओं का कम सामना करना पड़ता है।
- खेती भी अगर प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर एवं परमात्मा के चैतन्य से जुड़कर की जाए तो वह सभी तरह से समृद्ध एवं आजीविका का चिरस्थायी साधन बन सकती है।

आइए जानें खेती के मुख्य घटकों का महत्त्व एवं उनमें चैतन्य का आधार

कृषि उत्पादक घटक

ऋतु



पानी



बीज



जमीन

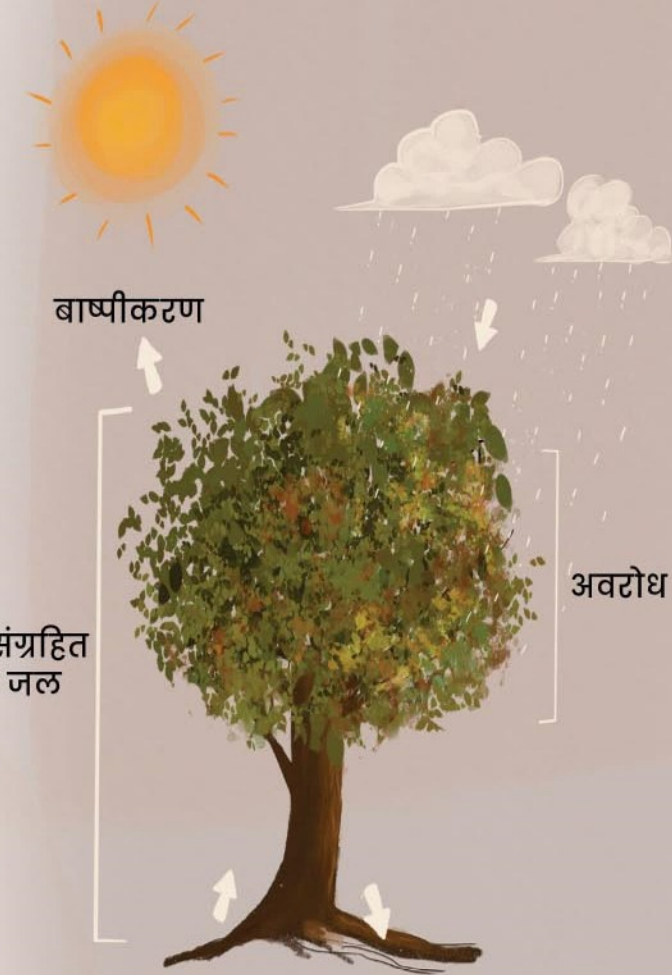


किसान



वृक्ष लाते हैं वर्षा

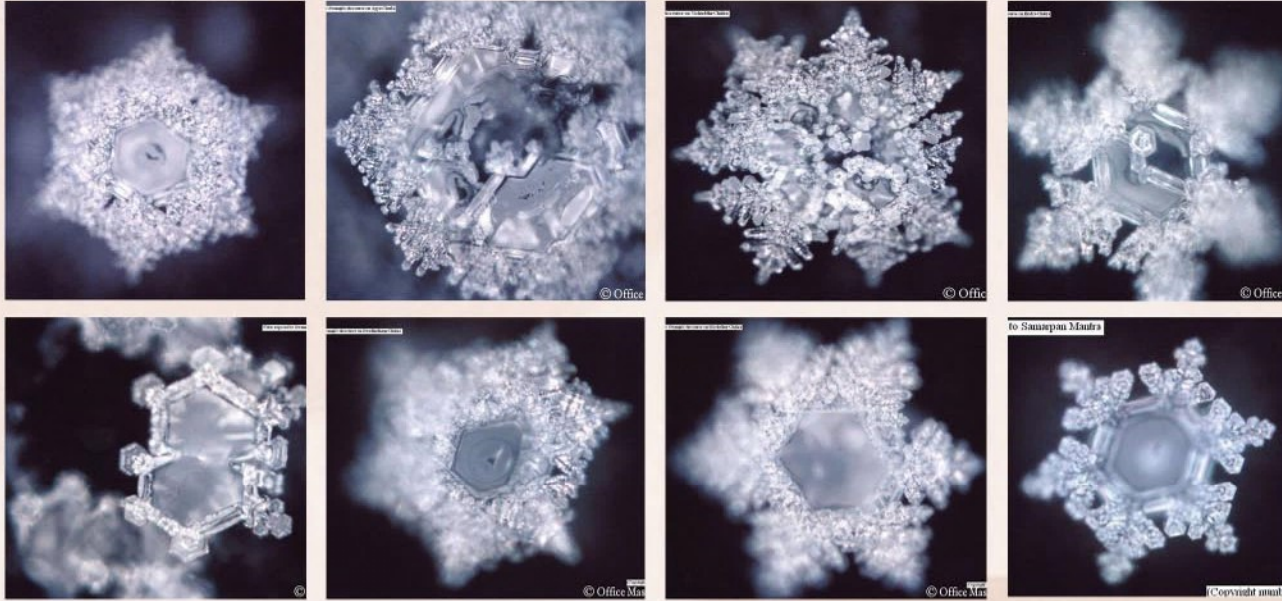
- ऋतु मनुष्य के नियंत्रण में नहीं है, परंतु वर्षा के लिए अनुकूल वातावरण को बनाए रखना मनुष्य की जिम्मेदारी है।
- वृक्षों से निकलती नमी बारिश के बादलों को बनाने में सहायक होने से वृक्ष वर्षा लाने में मददगार हैं।
- वृक्षों की जड़ें जमीन की गहराइयों तक पकड़ बनाकर मिट्टी के कटाव को रोकती हैं।
- वृक्षों से वातावरण में नमी (आद्रता) बनी रहती है एवं वातावरण में तापमान भी नियंत्रण में रहता है।
- अगर पानी के स्रोत - बाँध, तालाब, सरोवर आदि के पास वृक्षारोपण हो तो पानी के वाष्पीकरण की प्रक्रिया कम होती है और पानी का संचय भी बना रहता है।
- 80-90 के दशक में भयंकर सूखे के कारण झूझ रहे अहमदनगर (म.) के **हिवरे बाजार गाँव** के लोगों ने वृक्षारोपण द्वारा भूमि को सुजलाम्-सुफलाम् करने के सामूहिक प्रयास किए। फलस्वरूप उन्हें खेती के लिए बारिश की राह नहीं देखनी पड़ रही। जहाँ एक समय पानी की समस्या के कारण कितने सारे ग्रामवासियों ने पलायन कर दिया था, वहीं आज कितने सारे लोग समृद्धशाली हैं। वहाँ न पानी की कमी है, न हरियाली की!



जड़ों का प्रसारण व जमीन पर पकड़

पानी भावनाओं का सुचालक

- मानव शरीर में 72% पानी है। उसके प्रत्येक कोष में पानी है।
- पानी अत्यंत गुणग्राही है, उस पर मनुष्य की भावनाओं एवं विचारों का पूरा-पूरा असर पड़ता है।
- अगर प्राचीन कथाओं को पढ़ें तो हमें ज्ञात होता है कि आशीर्वाद/श्राप देने या संकल्प करने के लिए ऋषि-मुनि पानी को हथेली में लेकर अभिमंत्रित करते थे।



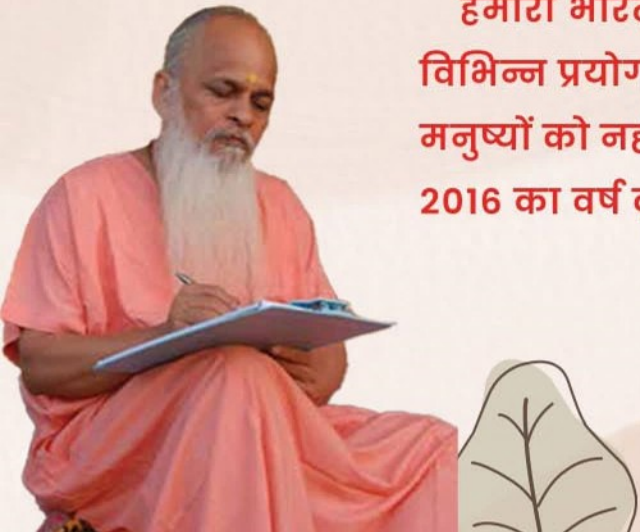
समर्पण ध्यानयोग महाशिविर, अजमेर 2008

वर्षाजल अमृत है...

- वर्षाजल से पूरी वनसंपदा अधिक खिल उठती है क्योंकि बारिश का पानी विचारों के प्रभाव से मुक्त, पूर्णतः प्राकृतिक होता है।
- अतः वर्षाजल का संचय हो, ऐसे प्रयत्न करने चाहिए।
- जगह-जगह से गुजरकर आए हुए संग्रहित पानी में जो विचारों के दोष आ जाते हैं, उन दोषों का शुद्धिकरण प्रार्थना एवं मंत्र से संभव है।
- जिस तरह पानी की बड़ी टंकी में उर्वरक डालकर उसे सिंचाई के माध्यम से पूरे खेत में पहुँचाया जाता है, उसी तरह मंत्र की सकारात्मक ऊर्जा को उस पानी में प्रवाहित करके पूरे खेत में पहुँचाया जा सकता है।

“हमारा भारत देश एक कृषिप्रधान देश है। कृषि के क्षेत्र में साधकों ने विभिन्न प्रयोग किए हैं। लेकिन उन प्रयोगों की जानकारी सर्वसामान्य मनुष्यों को नहीं है। वह जानकारी प्रत्येक कृषक तक पहुँचे, इस उद्देश से 2016 का वर्ष कृषक वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।

- हिमालय के महर्षि श्री शिवकृपानंद स्वामीजी
(संदर्भ: 'कृषक वर्ष' संदेश - 1-12-2015)



जमीन को उपजाऊ कैसे बनाएँ...

सभी वनस्पति ज़्यादातर कार्बनिक पदार्थों से बनी है।

कार्बोहाइड्रेट = कार्बन + ऑक्सीजन + हाइड्रोजन जो हवा और पानी से मिलता है।

वनस्पति को आवश्यक चार तत्व वातावरण से मिलते हैं जो उसकी 98 % पूर्ति करते हैं, पर 13 तत्व जो सिर्फ 2% ही उसका हिस्सा है, वह मिट्टी से प्राप्त होता है।

प्रकृति में सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टी दुनियाभर के जंगलों में तैयार होती है।

कोई भी रासायनिक खाद के बगैरह जंगलों में पौधे विकसित होते रहते हैं।

हमेशा उपजाऊ मिट्टी जंगल में कैसे बनी रहती है?

इन जंगलों में पानी और हवा की वजह से पत्थरों-चट्टानों का बारीक मिट्टी में रूपान्तरण होता रहता है। यह मिट्टी पेड़ों से झड़े हुए पत्तों पर जमा होती रहती है। जंगल के सभी जीव मिट्टी और पत्तों के इस मिश्रण पर अपने मल-मूत्र का त्याग करते रहते हैं। बरसात का पानी और पेड़ों की छांव इस मिश्रण में नमी बनाए रखते हैं। जिससे झड़े हुए पत्तों से खाद बनने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहने से जमीन की मृदा ऊपजाऊ बनी रहती है।

जंगल में यह प्रक्रिया 100 से 500 सालों तक चलती रहने के बाद ऊपजाऊ मिट्टी की एक इंच की परत तैयार हो पाती है। प्रकृति के इस चक्र के अवलोकन के बाद अनेक प्रयोगों के तहत अमृत मिट्टी बनाई गई।



फसल के अवशेषों का उचित प्रबंधन बढ़ाए जमीन की उपजाऊ शक्ति

- अमृत मिट्टी तैयार करने के लिए लगनेवाले जैविक पदार्थ जैसे पेड़ों के पत्ते, फसलों का भूसा, घास, खरपतवार, चारा, सब्जियों और फलों के छिलके, गोबर, बचा हुआ खाना, प्राणियों का मल आदि को जैविक कचरा या जैवभार कहा जाता है।
- फसल के अवशेषों से अमृत मिट्टी बनाकर उसका खेत में पोषक तत्वों की मात्रा को बढ़ाने के लिए उपयोग करें तो मिट्टी की ऊपज शक्ति बढ़ती है।
- वर्मी कम्पोस्ट, गोबर की खाद जैसे प्राकृतिक खाद का इस्तेमाल भी जमीन की उर्वरक शक्ति बढ़ाता है।

जैवभार को जलाने की जगह उसका खाद बनाकर उपयोग करना चाहिए।

अमृत मिट्टी

प्राकृतिक जंगलों में ऊपजाऊ मिट्टी जिस तरह नैसर्गिक रूप से बनती है, प्रकृति के उसी तरीके की नकल करते हुए, जैविक कचरे और बारीक मिट्टी की पतली-पतली परतें बनाकर उनके ढेर तैयार करने होते हैं। यह जैविक कचरा गोबर, गौमूत्र, गुड और पानी से बने अमृत जल में भिगोकर तैयार किया रहता है। इस पर विविध बीजों को लगाकर उसका हरीतिकरण एवं समय पर पत्तों की कटाई और उन्हें ढेर में मिश्रित करना होता है।



बीज

- एक नन्हें से बीज में बड़ा पेड़ बनने की और अपनी तरह के करोड़ों बीज बनाने की आनुवांशिक जानकारी और क्षमता होती है।
- जीवंत ऊर्जा रखनेवाले बीज में भी भाव से बोले गए मंत्र एवं प्रार्थना से चैतन्य का सकारात्मक असर आता है
- जिसका सीधा असर न केवल उत्पादन पर अपितु खानेवाले सभी मनुष्य के मानस पर भी पड़ता है।

बीज को प्रार्थना के जरिए संस्कार देकर कृषि में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

किसान

- प्रकृति का पुजारी, माँ धरती का उपासक एवं परिश्रम, त्याग, सेवा की मूर्ति है किसान
- भारत देश की आत्मा है किसान जो संस्कृति और सभ्यता को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।
- संस्कृत में कहा गया है:

परोपकाराय सता विभूतय

अर्थात् सज्जनों का जीवन दूसरों की भलाई के लिए होता है।

- किसान भी सज्जन हैं जिनका सारा जीवन जनकल्याण से ओत-प्रोत है।

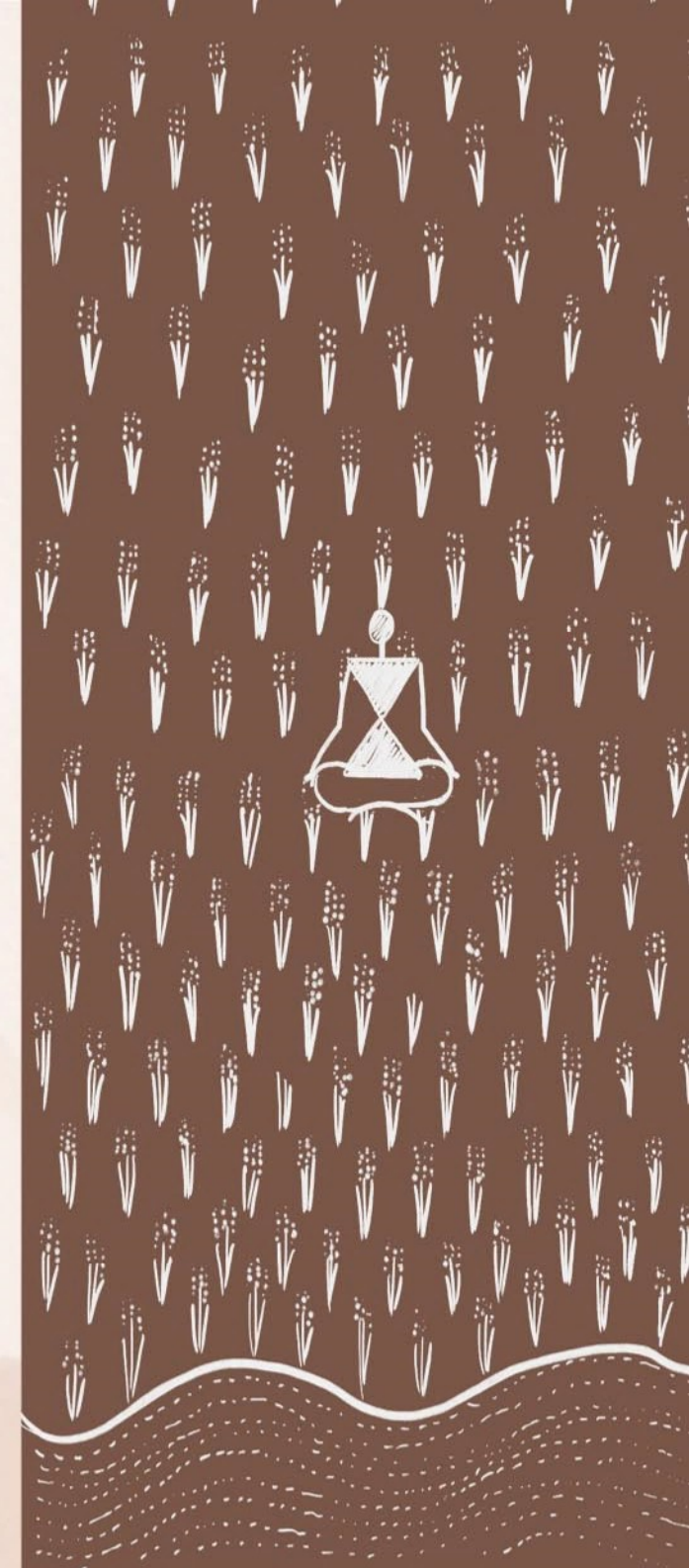
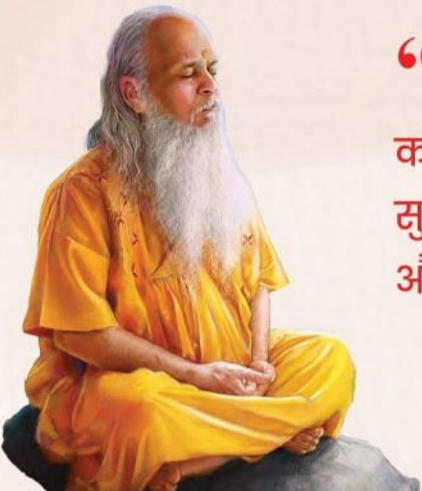


किसान और ध्यान

- कृषि के घटकों में चैतन्य को प्रवाहित करने के लिए चाहिए किसान का शुद्ध एवं सशक्त चित्त।
- ध्यान वह सशक्त माध्यम है जिसके जरिए मनुष्य का चित्त शुद्ध और सशक्त होता है। सशक्त चित्त से की गई प्रार्थना फलदायी होती है।
- प्रकृति के सान्निध्य में रहनेवाले भोलेभाले किसान दूसरों की तुलना में बहुत ही सरलता से ध्यान से जुड़कर अपने चित्त को सशक्त कर सकते हैं और कृषि के सभी घटकों को परमात्मा के चैतन्य से समृद्ध कर सकते हैं।
- ध्यान के जरिए परमात्मा से संबंध स्थापित हो जाता है, जिससे हमारी प्रत्येक गतिविधि उस परम चैतन्य के प्रभाव में घटित होते रहती है।
- व्यसन और निराशा जैसी नकारात्मक बातों में से मुक्त होकर स्वस्थ, प्रसन्न एवं सुखी जीवन ध्यान से संभव है।

“ अभी जो किसान आत्महत्याएँ कर रहे हैं, वह केवल निराशा के कारण। नियमित समर्पण ध्यान करने से आभामंडल का एक सुरक्षा कवच किसान स्वयं ही अपने आसपास निर्माण कर सकेगा और इस आत्महत्या की समस्या का भी निदान हो जाएगा।

- हिमालय के महर्षि श्री शिवकृपानंद स्वामीजी
(संदर्भ: 'कृषक वर्ष' संदेश - 1-12-2015)



परमात्मा यानी क्या?

- विश्व के कण-कण में व्याप्त चेतनाशक्ति परमात्मा है।
- कली में से फूल खिलानेवाली शक्ति परमात्मा है।
- एक बीज में से हजारों बीज बनानेवाली शक्ति परमात्मा है।
- प्रकृति के चक्र को चलानेवाली शक्ति परमात्मा है।
- हम अपनी श्रद्धा के अनुसार किसी को भी परमात्मा मान सकते हैं।

परमात्मा के रूप अलग-अलग हो सकते हैं, परंतु परमात्मा का स्वरूप एक ही है।

- सामूहिकता में परमात्मा की चेतना आसानी से महसूस होती है।

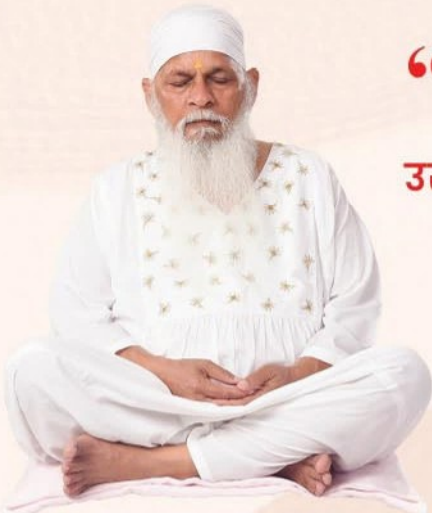


“परमात्मा का चैतन्य एक सकारात्मक शक्ति है।

उसका सकारात्मक प्रभाव कृषि पर भी देखा गया है।

- हिमालय के महर्षि श्री शिवकृपानंद स्वामीजी

(संदर्भ: 'कृषक वर्ष' संदेश - 1-12-2015)



धर्म

हम जिन्हें धर्म समझते हैं, वे धर्म बाहरी हैं, उपासना की पद्धतियाँ हैं।

हम सभी की उपासना पद्धतियाँ अलग-अलग हो सकती हैं परंतु हम सब मनुष्य हैं,

अतः हमारे भीतर का एक ही धर्म है – मानव धर्म, प्रेम।

यह ठीक वैसा ही है जैसे घोड़े का धर्म तेज दोड़ना और कुत्ते का धर्म वफादारी है।



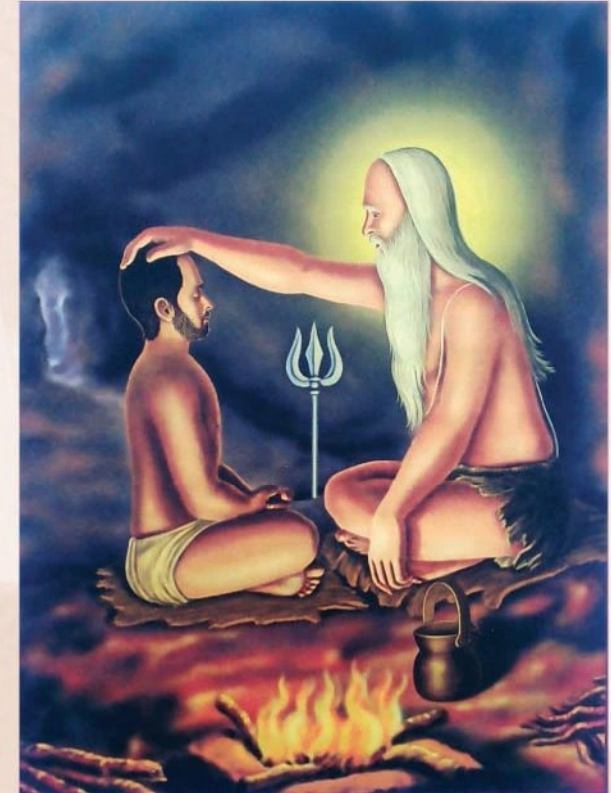
सद्गुरु

सद्गुरु स्वयं परमात्मा नहीं होते, परंतु वे परमात्मा के निखालस माध्यम होते हैं,

जिनके द्वारा हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं।

आत्मसाक्षात्कार जैसी अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ घटना जीवंत सद्गुरु के सान्निध्य में

घटित होती है।



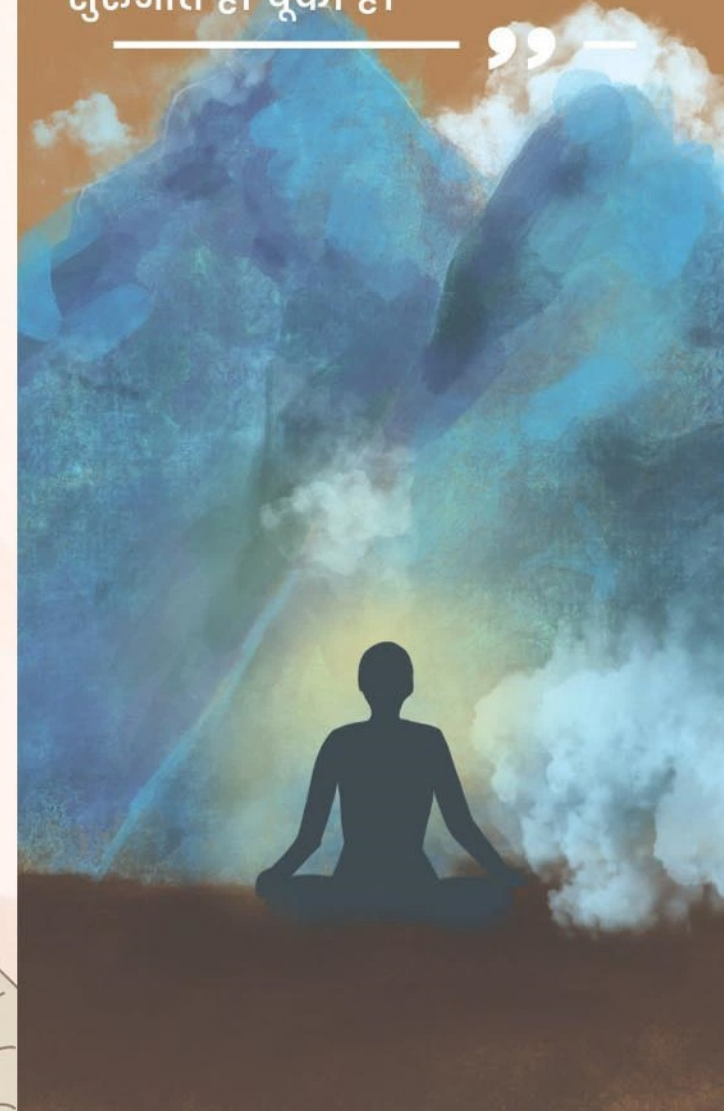
आईए, जानें हिमालय के समर्पण ध्यान को...

हिमालयीन ध्यान कोई ध्यानपद्धति नहीं है, बल्कि गुरु की आत्मा द्वारा शिष्य की आत्मा पर किया गया एक संस्कार है। आत्मसाक्षात्कार जैसी अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ घटना गुरुकृपा में घटित हो जाती है।

समाज में निर्विचार स्थिति को ध्यान समझा जाता है जबकि निर्विचार स्थिति प्राप्त होने के बाद में ध्यान की शुरुआत होती है। यह बात हिमालयीन ध्यान से सहज समझ में आ जाती है।

- यह अनुभूति पर आधारित, क्रियाविहीन ध्यान आज के समाज के लिए उपयुक्त है।
- नियमित 30 मिनट ध्यान से समाज में रहते हुए भी चक्रों-नाड़ियों का शुद्धिकरण तथा आभामंडल का स्वच्छिकरण एवं विकास संभव है।
- इसके माध्यम से सामान्य मनुष्य भी धीरे-धीरे शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति, सुमधुर पारिवारिक व सामाजिक संबंध, भौतिक समाधान और अंततः मोक्ष की स्थिति प्राप्त कर सकता है।
- इस ध्यान में भाषा, जाति, धर्म, देश, रंग, लिंग जैसे भेदों को कोई स्थान नहीं है। जिस तरह हवा, पानी, प्रकाश संपूर्ण सृष्टि को उपलब्ध होते हैं, ठीक उसी प्रकार से यह अमूल्य ध्यान भी मानवमात्र के लिए उपलब्ध है और निःशुल्क भी है।

— “ —
आज विश्व के सभी महाखंडों में लाखों लोग हिमालयीन ध्यान को अपनाकर अपना जीवन सुखमय बना रहे हैं, मानो 'वसुधैव कुटुंबकम्' की परिकल्पना के चरितार्थ होने की शुरुआत हो चुकी है।



यौगिक विज्ञान के मूलभूत तत्त्व (आभामंडल, नाड़ी, चक्र, कुंडलिनी)

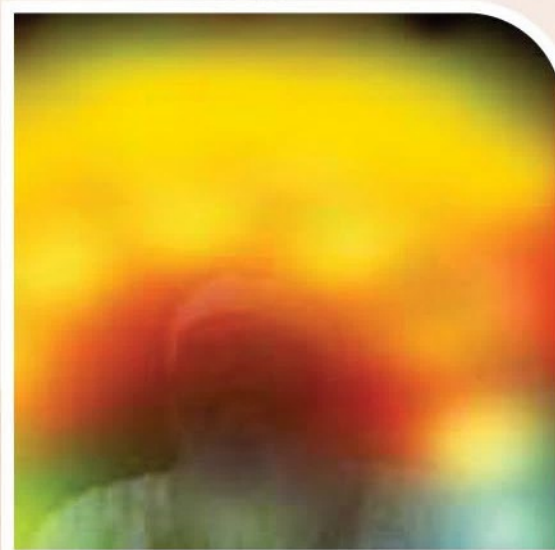
आभामंडल (Aura)

- जैसे अंगूठे की छाप प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग है, वैसे प्रत्येक व्यक्ति का आभामंडल अलग-अलग है।
- सामान्य मनुष्य को ओरा समझ में नहीं आता लेकिन अच्छे ओरा वाले मनुष्य के सान्निध्य में अच्छा लगता है। उनके प्रभाव में लोग आते हैं, वे किसी के प्रभाव में नहीं जाते।
- ठीक वैसे ही कई स्थान पर जाते बराबर हमें वह स्थान छोड़ देने की इच्छा होना या बुरे विचार आना शुरू होना उस स्थान के खराब आभामंडल का द्योतक है।
- तंदुरुस्ती, व्यक्तित्व, मानसिक स्थिति, परिस्थिति सबकुछ व्यक्ति के स्वयं के आभामंडल पर निर्भर है और आभामंडल व्यक्ति के स्वयं के विचारों से प्रभावित होता है।
- व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति के अनुसार आभा / सूक्ष्म शरीर के रंग बदलते हैं।
- नियमित ध्यान से व्यक्ति का आभामंडल शुद्ध व सशक्त होता है।

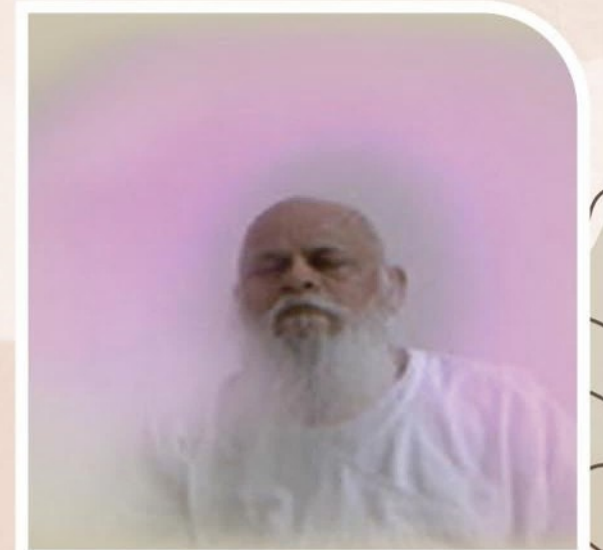
2001



2002



2006



यौगिक विज्ञान के मूलभूत तत्त्व (आभामंडल, चक्र, नाड़ी, कुंडलिनी)

चन्द्र नाड़ी

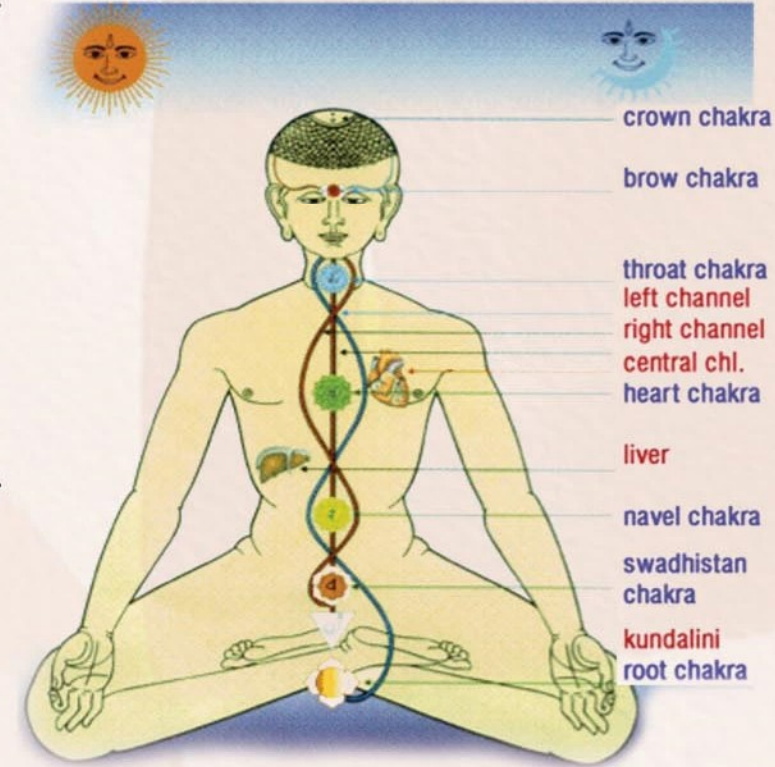
- जब व्यक्ति भूतकाल के विचार करता है, तब चन्द्र नाड़ी में होता है।
- चिंता, तनाव, उदास व्यक्तित्व तथा अतीत की नकारात्मक घटनाएँ याद करने की आदत
- चन्द्र नाड़ी को शुद्ध करने के लिए पृथ्वी महाभूत के सान्निध्य में रहना- नंगे पैर चलना, घास पर बैठना

सूर्य नाड़ी

- जब व्यक्ति भविष्य के विचार करता है, तब सूर्य नाड़ी में होता है।
- बहुत सक्रिय, अभिमानी, क्रोधी, स्वार्थी, दिवा स्वप्न देखने वाला
- सूर्य नाड़ी को शुद्ध करने के लिए अग्नि महाभूत का सान्निध्य- दीया, यज्ञ, सूर्योदय दर्शन आदि

मध्य नाड़ी

- जब हम वर्तमान में रहते हैं, तब मध्य नाड़ी में होते हैं।
- हम आधी ऊर्जा भूतकाल के विचारों में तथा आधी ऊर्जा भविष्य की चिंता में गँवा देते हैं।
- इसके परिणामस्वरूप हम बहुत कम शक्ति से वर्तमान में कार्य कर पाते हैं।
- नियमित ध्यान से हम धीरे-धीरे मध्य नाड़ी में रहना (वर्तमान में) सीख सकते हैं।



यौगिक विज्ञान के मूलभूत तत्त्व (आभामंडल, चक्र, नाड़ी, कुंडलिनी)

चक्र (Energy Centers)

- चक्र सूक्ष्म शरीर के ऊर्जा केंद्र हैं।
- चक्रों का प्राथमिक कार्य ब्रह्मांड से ताजी ऊर्जा ग्रहण करना तथा विचारों से आई सूक्ष्म शरीर की दूषित ऊर्जा को बाहर फेंकना है।
- मेरुदंड की मध्य नाड़ी पर मुख्य सात चक्र स्थित हैं जो सीधे अन्तःस्रावी ग्रंथियों से संबंधित हैं।
- जैसे ही चक्र सक्रिय व संतुलित होते हैं, सभी अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ सही ढंग से कार्यरत होती हैं।
- नियमित ध्यान से चक्र शुद्ध और विकसित होते हैं।

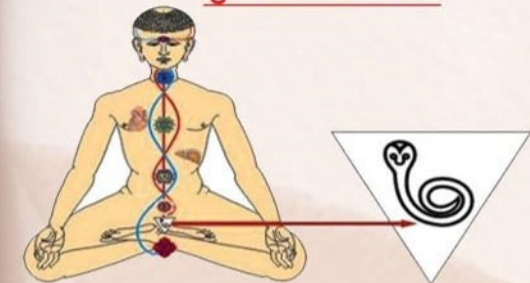
कुंडलिनी : (divine serpent energy)

- यह दिव्य सर्पाकार शक्ति है जो ज्यादातर निष्क्रिय रूप में मूलाधार चक्र के पास मेरुदंड के नीचले हिस्से में त्रिकोणाकार अस्थि में स्थित रहती है।
- कुंडलिनी जागृत होने से वह मूलाधार से लेकर हर एक चक्र से गुजरते हुए सहस्रार तक पहुँचती है और सभी चक्रों को शुद्ध करके सक्रिय करती है, सभी चक्र पूर्ण ऊर्जा के साथ क्रियान्वित हो जाते हैं।

फल स्वरूप निम्नलिखित लाभ मिलते हैं ...

- स्वास्थ्य लाभ
- आत्मधर्म की जागृति
- सुरक्षा कवच
- समाधान की प्राप्ति

कुंडलिनी शक्ति



स्वास्थ्य लाभ

- हमारे शरीर के जितने भी रोग हैं, वे हमारे भीतर के चक्र खराब होने से होते हैं।
- नियमित ध्यान से सभी चक्र ऊर्जा के कारण सक्रिय होने से हम बीमारियों से मुक्त रह सकते हैं।

आत्मधर्म की जागृति

- 'सद्गुरु' के सान्निध्य में आत्मा जागृत होने पर मनुष्य को स्वयं को ही जान हो जाता है – क्या सही है और क्या गलत है।

समाधान की प्राप्ति

- अपने ही भीतर परमात्मा है, इसका अनुभव होता है और मैंने परमात्मा को पा लिया, यह समाधान जीवन में प्राप्त होता है।
- समाधान की प्राप्ति के बाद ही मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति प्रारंभ होती है।

- श्रद्धा और विश्वास हमारे आभामंडल को सशक्त करते हैं।
- अनुभूति से श्रद्धा निर्माण होती है।
- श्रद्धा से विश्वास निर्माण होता है।

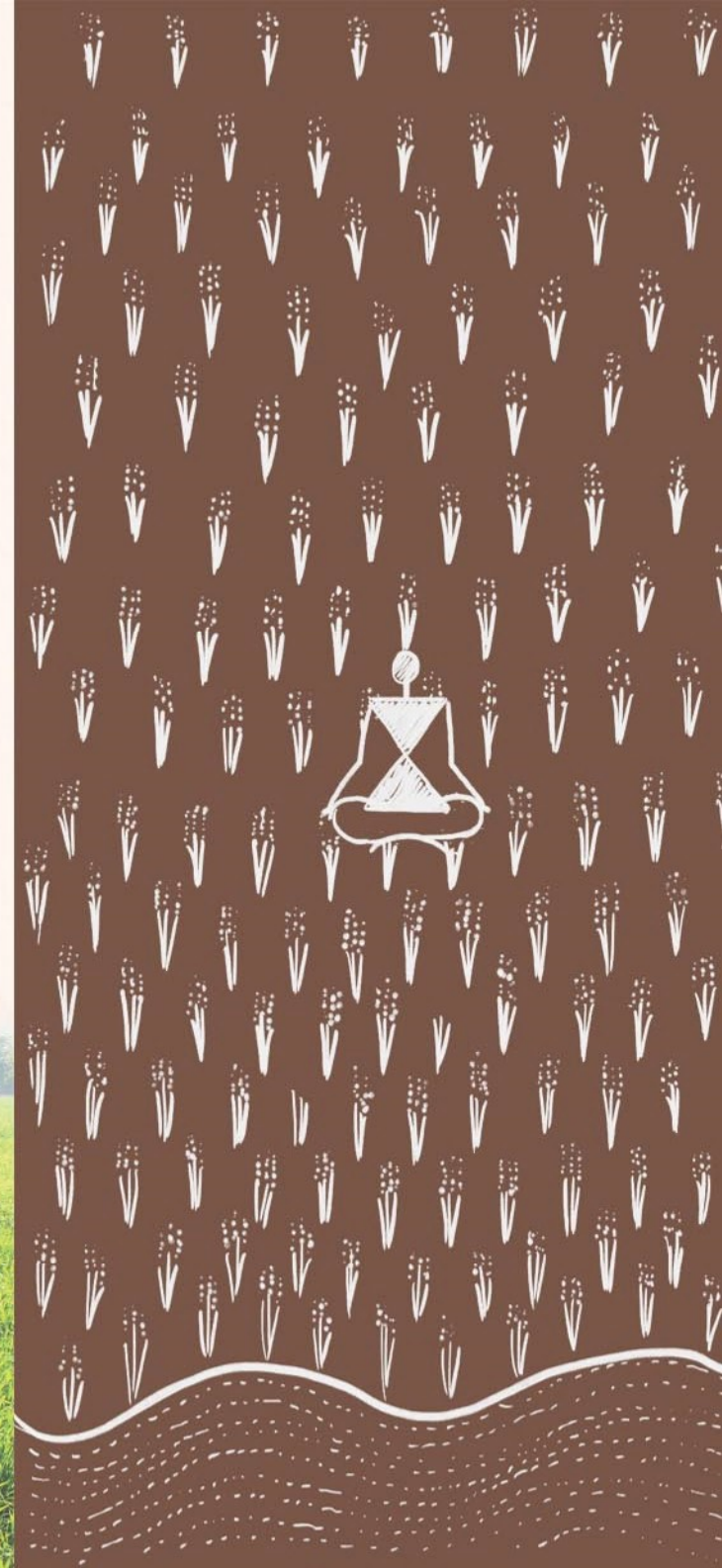
सुरक्षा कवच

- नियमित ध्यान मनुष्य को भीतर से और बाहर से सुरक्षित बनाता है।
- वह एक बड़ी, लाखों की सकारात्मक सामूहिकता से जुड़ा होता है, जिससे वह अपने-आपको अकेला नहीं समझता। इस प्रकार **आत्महत्या से सुरक्षा भी भीतर से प्राप्त हो सकती है।**
- मनुष्य नकारात्मक बातों, नकारात्मक विचारों से बच सकता है और फिर उसके हाथ से कोई गलत और पाप कर्म घटित ही नहीं होगा, क्योंकि नकारात्मक ऊर्जा ही उस तक नहीं पहुँच पाएगी।



मंगलकारी कृषि

- फिर से हम प्राचीन कृषि की कला की ओर बढ़ेंगे
- कृषि के घटकों (भूमि, पानी, बीज और किसान स्वयं) को परमात्मा के चैतन्य से जोड़कर समृद्ध करेंगे
- धरतीमाँ की गोद में बैठकर प्रार्थना करके धरतीमाँ से संबंध स्थापित करेंगे।
- परमात्मा पर अपार श्रद्धा रखते हुए, नियमित ध्यान से स्वयं को संतुलित रखेंगे।
- भजन-गीत गाते हुए कृषि का मंगलकार्य प्रारंभ करेंगे।
- इस जानकारी का उपयोग करके हम समृद्ध बनें, राज्य को समृद्ध बनाएँ, देश को समृद्ध बनाएँ।
- कृषि में चैतन्य को जोड़कर समग्र सृष्टि के लिए कृषि को कल्याणकारी बनाएँगे।



ध्यान का आस्वाद

- हम अपने-आपको क्या समझते हैं, उसी के ऊपर हमारा जीवन कैसा व्यतीत होगा, वह निर्भर करता है। हम अगर अपने-आपको शरीर समझते हैं तो जीवनभर हम अपने शरीरभाव में ही रहेंगे और जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं से ही विचलित होकर सदा ही दुःखी रहेंगे।
- अगर हम अपने-आपको एक आत्मा समझते हैं तो हमारा आत्मभाव बढ़ेगा। और जैसे ही आत्मभाव बढ़ेगा, शरीरभाव कम हो जाएगा। और जैसे ही शरीरभाव कम होगा, हमारे जीवन की समस्याएँ भी कम हो जाएगी। क्योंकि आत्मा की कोई समस्या ही नहीं होती है, सारी समस्याएँ शरीर की ही होती हैं। जब शरीरभाव ही नहीं होगा तो शरीर की समस्याएँ भी नहीं होंगी।
- इसलिए इस हिमालय के ध्यानयोग में आत्मभाव ही बढ़ाया जाता है। इसीलिए इसमें संपूर्ण भाव के साथ हम जो बोल रहे हैं, वह ही मानते हुए एक मंत्र बोला जाता है:
"मैं एक पवित्र आत्मा हूँ, मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ।"
- इस प्रकार से मंत्र बोलकर नियमित कम-से-कम आधा घंटा साधना करना आवश्यक होता है।

— “ —
 “प्रकृति से जुड़े कृषक यदि 'प्रकृतिमय' होना सीख ले तो उनके जीवन में कोई समस्या ही नहीं रहेगी।
 — ” —

